By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C Madhubani

# वारेन हेस्टिंग्स के सुधार

(The reforms of Warren Hastings.)

हेस्टिंग्स जब बंगाल के गवर्नर के रूप में भारत आया, तब उसने अपने आपको वाह्य तथा आंतरिक दोनों ही कठिनाईयों से भरा हुआ पाया। परन्तु सभी कठिनाईयों का सामना करने की हेस्टिंग्स में पूरी क्षमता थी। भारत में ब्रिटिश राज्य को सुदृढ़ करने के लिए सर्वप्रथम आंतरिक और तत्पश्चात वाह्य सुधार की अत्यधिक आवश्यकता थी। अतएव वारेन हेस्टिंग्स ने गवर्नर बनने पर सर्वप्रथम सुधारों की ओर ध्यान दिया और तुरन्त सुधार कार्य आरम्भ कर दिया। सन 1772 ई० से 1774 ई० तक वह गवर्नर रहा। यह अल्पावधि में उसने निम्नांकित सुधार किए:-

*1. शासन संबंधी सुधार:- वारेन हेस्टिंग्स ने सर्वप्रथम क्लाइव द्वारा स्थापित द्वैध शासन का अंत कर दिया। सिताबराय और रजा खाँ पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें पदच्युत कर दिया गया। हेस्टिंग्स ने बंगाल के नवाब से शासन-संबंधी अधिकार ले लिए। नवाब शासकीय कार्यों से अलग हो गया और उसे पेन्शन दे दी गई। हेस्टिंग्स ने कलकत्ता को राजधानी बनाया तथा खजाना मुर्शिदाबाद से हटाकर कलकत्ता में स्थापित किया। भारतीय कलक्टरों के स्थान पर अंग्रेज कलक्टरों की नियुक्ति की।

*2. आर्थिक सुधार:- हेस्टिंग्स के गवर्नर होने तक कई प्रकार के सिक्के प्रचलित थे जिससे व्यापार को घाटा पहुँचता था। हेस्टिंग्स ने कलकत्ता में एक सरकारी टकसाल की स्थापना करायी तथा निर्दिष्ट प्रकार के सिक्के चलाने का प्रयत्न किया।

नमक का एकाधिकार कम्पनी को दिया गया। वारेन हेस्टिंग्स ने आलम शाह की पेन्शन बंद कर दी क्योंकि वह मराठों के संरक्षण में चला गया। उसने मुगल सम्राट से कड़ा और इलाहाबाद भी ले लिया तथा उन्हें 50 लाख रुपयों पर अवध के नवाब के यहाँ बेच दिया। बंगाल के नवाब की पेंशन घटा 13 लाख कर दी गई। हेस्टिंग्स के इन कार्यों से कम्पनी का खर्च कम हो गया तथा आमदनी बढ़ गयी।

* 3. व्यापार-संबंधी सुधार:- हेस्टिंग्स के गवर्नर बनने के पूर्व व्यापार के मार्ग में कई कठिनाईयाँ थी। व्यापारियों से चुंगी वसूलने के लिए अनेक चौकियाँ कायम थी। हेस्टिंग्स ने इन अनेक चौकियाँ को हटा दिया और सिर्फ 5 चौकियाँ रहने दिया। कलकत्ता, ढाका, हुगली, मुर्शिदाबाद और पटना। तम्बाकू, सोपारी तथा नमक को छोड़ शेष व्यापारिक वस्तुओं पर 2.5% प्रतिशत चुंगी लगाने की व्यवस्था हुई। इससे कंपनी की आय बढ़ गयी तथा व्यापार का विकास हुआ।

* 4. लगान-संबंधी सुधार:- वारेन हेस्टिंग्स ने लगान की वसूली के लिए पंचवर्षीय लगान-व्यवस्था जारी की। इसके अनुसार सबसे अधिक डाक बोलने वाले को लगान वसूली का ठेका पाँच वर्ष दे दिया जाता था। इस व्यवस्था से कृषकों की तकलीफ और बढ़ गयी। अतः हेस्टिंग्स ने पंचवर्षीय व्यवस्था के स्थान पर एक वर्ष के लिए लगान की वसूली का ठेका देना शुरू किया।

* 5. न्याय संबंधी सुधार:- वारेन हेस्टिंग्स ने प्रत्येक जिले में एक दीवानी तथा एक फौजदारी अदालतों की स्थापना की। दीवानी अदालत की कार्यों को कलक्टर देखता था तथा फौजदारी अदालत के कार्यों का संचालन मुफ्ती करते थे।

कलकत्ता में वारेन हेस्टिंग्स ने अपील की दो अदालतें स्थापित की:-

1. सदर-दीवानी अदालत
2. सदर निजाम अदालत

सदर दीवानी अदालत में जिले की कचहरी के निर्णय के विरुद्ध ~~दीवानी~~ मुकदमों की अपील होती थी तथा सदर अदालत में फौजदारी मुकदमों की अपील निजामत अदालत ~~के लिए~~ निर्णय के विरुद्ध होती थी। सदर दीवानी अदालत मे गवर्नर तथा उनकी काउन्सिल के दो वरिष्ठ सदस्य न्यायाधीश कार्य करते थे तथा सदर निजामत अदालत में दारोगा न्यायाधीश का कार्य करता था।

* 6. सार्वजनिक सुधार:- वारेन हेस्टिंग्स ने बंगाल से अराजकता का अंत कर दिया। उन दिनों संन्यासी नामक डाकुओं का उपद्रव बहुत बढ़ गया था। वे लोग यात्रियों बहुधा लूट लिए थे। हेस्टिंग्स ने इनका पूर्ण रूप से दम कर दिया। चोर-डाकुओं को कड़ी सजा दी गई।

—: निष्कर्ष :—

वारेन हेस्टिंग्स ही ऐसा गवर्नर जनरल था जिसने ~~क्लाइव~~ द्वारा बंगाल मे लगाए गए ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पौधे को मराठा तथा मैसूर के आक्रमणकारियों एवं आक्रमण दर्जी डिडियों से बचाया और उसे नष्ट नही होने नही दिया।